No. of Printed Pages : 4

MHD-21

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम. ए. हिन्दी)

(एम. एच. डी.)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2020

एम.एच.डी.-21 : मीरा का विशेष अध्ययन

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक : 50*

नोट : *प्रश्न क्रं. 1 अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं* ***तीन*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

1. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं **दो** की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 2×10=20

(क) भज मन चरन कंवल अबिनासी।

जेताइ दीसे धरनि गगन बिच, तेताइ सब उठि जासी।

कहा भयो तीरथ ब्रत कीन्हें, कहा लिये करवत कासी॥

इस देही का गरब न करना, माटी में मिल जासी।

यो संसार चहर की बाजी, साँझ पड्याँ उठि जासी॥

कहा भयो है भगवा पहर्‌यां, घर तज भये संन्यासी।

जोगी होय जुगति नहीं जाती, उलटि जनम फिर आसी॥

अरज करौं अबला कर जोरे, स्याम तुम्हारी दासी।

मीरां के प्रभु गिरधरनागर, काटो जम की फाँसी॥

(ख) (ऊदौँ) थाँने बरज बरज मैं हारी, भाभी मानों बात हमारी।

राणे रोस कियो थाँ ऊपर, साधाँ में मत जारी।

कुलकै दाग लगै छै भाभी, निन्दा हो रहि भारी॥

साधाँ रे संग बन बन भटको, लाज गुमाई सारी।

बड़ाँ घराँ थे जनम लियो छै, नाँचो दे दे तारी॥

बर पायो हिंदवाणो सूरज, थे कई मन में धारी।

मीराँ गिरधर साध संग तज, चलो हमारे लारी॥

(ग) तू मत बरजे माइडी, साधाँ दरसण जाती।

राम नाम हिरदे बसे, माहिले मन माती।

माइ कहें सुन धीहड़ी, काहे गुण फूली।

लोक सोवे सुख नींदड़ी, तूँ क्यूं रैणजँ भूली॥

गेलीं दुनिया बावली, ज्याँकूँ राम न भावे।

ज्याँरै हिरदे हरि बसे, त्याँकूँ नींद न आवे॥

चोमासा की बावड़ी, ज्याँकी नीर न पीजे।

हरि नाळे अमृत भरे, ज्याँकी आस करीजे॥

रूप सुरंगा रामजी, मुख निरखत जीजे।

मीरां व्याकुल बिरहणी, हरि अपणी कर लीजे॥

(घ) पगे घूँघरू बाँध मीरां नाची रे।

मैं सपने तो नारायण की, हो गई आपही दासी रे॥

विष का प्याला राणाजी ने भेज्या, पीवत मीरां हाँसी रे॥

लोक कहे मीरां भई बावरी, बाप कहे कुलनासी रे॥

मीरां के प्रभु गिरधारनागर, हरिचरणां की दासी रे॥

2. मीरा के युग की दार्शनिक पृष्ठभूमि का परिचय दीजिए। 10

3. मीरा के आराध्य 'कृष्ण' का स्वरूप स्पष्ट कीजिए। 10

4. मीरा की काव्य-कला के विविध पक्षों पर प्रकाश डालिए। 10

5. मीरा की कविता में स्त्री-सशक्तीकरण के बिन्दुओं की पड़ताल कीजिए। 10

6. निम्नलिखित में से किन्हीं ***दो*** पर टिप्पणियाँ लिखिए : $2\times5=10$

(क) मीरा का द्वारिका प्रवास

(ख) गुजरात में भक्ति आन्दोलन

(ग) गंगा बाई

(घ) मीरा की भक्ति में वृंदावन का महत्व